पाठ 27

1. नए फिरौन ने इस्राएलियों के साथ क्या किया?

- फिरौन ने सब इस्राएलियों को दास बना लिया।

2. फिरौन ने इस्राएलियों को दास क्यों बनाया?

- क्योंकि फिरौन को डर था कि इस्राएली उसके देश पर अधिकार कर लेंगे।

3. फिरौन क्यों डरता था कि इस्राएली उसके देश पर अधिकार कर लेंगे?

- क्योंकि इस्राएली बहुत से लोग बन गए थे।

4. इस्राएलियों को गुलाम बनाने के लिए फिरौन का मार्गदर्शन कौन कर रहा था?

-शैतान।

5. शैतान इस्राएलियों का नाश क्यों करना चाहता था?

-क्योंकि शैतान जानता था कि परमेश्वर ने इस्राएलियों के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजने का वादा किया था।

6. परमेश्वर ने इस्राएलियों को आशीष क्यों दी?

-क्योंकि परमेश्वर इस्राएलियों से प्रेम करता था।

-क्योंकि परमेश्वर अब्राहम, इसहाक और याकूब से किए गए अपने वादे को नहीं तोड़ेगा।

7. परमेश्वर ने फिरौन की बेटी को मूसा को गोद लेने के लिए क्यों भेजा?

-क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से बाहर ले जाने और मूसा के द्वारा दासता लाने की योजना बनाई थी।

8. क्या इस्राएली फिरौन से अपने आप को बचाने में समर्थ थे?

-नहीं।

9. क्या मूसा इस्राएलियों को फिरौन से बचाने में समर्थ था?

-नहीं।

10. केवल वही कौन था जो इस्राएलियों को फिरौन से बचाने में सक्षम था?

-परमेश्वर।

11. केवल वही कौन है जो लोगों को शैतान से बचा सकता है?

-परमेश्वर।

-इस्राएली मिस्र में 400 साल से गुलामी में थे।

-इस्त्राएलियों ने बहुत दुख उठाया, इसलिए उन्होंने परमेश्वर की दोहाई दी।

आइए पढ़ें निर्गमन 2:23

23 इस्त्राएलियों ने अपनी दासता के कारण कराह उठी, और दोहाई दी, और उनकी दासता के कारण उनकी दोहाई परमेश्वर के पास गई।

-क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों की पुकार सुनी?

आइए पढ़ें निर्गमन 2:24-25

24-परमेश्वर ने उनका कराहना सुना और उस ने इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ अपनी वाचा को स्मरण किया।

25 तब परमेश्वर ने इस्राएलियों पर दृष्टि करके उनकी चिन्ता की।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों की पुकार सुनी।

-परमेश्वर ने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से अपने वादे को भी याद किया।

-इब्राहीम, इसहाक और याकूब से परमेश्वर का क्या वादा था?

-परमेश्वर का वादा था कि, 400 साल बाद, वह इस्राएलियों को वापस कनान देश में ले जाएगा।

-शायद इस्राएलियों को लगा कि ईश्वर उन्हें भूल गया है, लेकिन ईश्वर नहीं भूलता।

-परमेश्वर हमेशा वही करेगा जो वह वादा करता है वह करेगा।

-यद्यपि परमेश्वर कभी जल्दी में नहीं होता, वह हमेशा वही करेगा जो उसने अपने समय में किया है।

-मूसा कहाँ था?

-क्या परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालने की योजना नहीं बनाई थी?

-क्या परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों को दासता से बाहर निकालने की योजना नहीं बनाई थी?

-क्योंकि फिरौन मूसा को मारना चाहता था, मूसा मिद्यान देश में भाग गया था।

-मिद्यान देश में मूसा ने ब्याह लिया था, और उसके दो बेटे थे।

-एक दिन जब मूसा अपने ससुर की भेड़ों की देखभाल कर रहा था, तो उसने एक अजीब नजारा देखा।

आइए पढ़ें निर्गमन 3:1-3

1 मूसा अपने ससुर यित्रो की भेड़-बकरियां जो मिद्यान का याजक या, चरा रहा था, और वह भेड़-बकरियों को जंगल के उस पार ले गया, और परमेश्वर के पर्वत होरेब के पास पहुंचा।

2-वहां यहोवा का दूत एक झाड़ी के भीतर से आग की लपटों में उसे दिखाई दिया। मूसा ने देखा कि यद्यपि झाड़ी में आग लगी थी, वह नहीं जली।

3-तब मूसा ने सोचा, "मैं वहाँ जाकर यह विचित्र दृश्य देखूँगा कि झाड़ी क्यों नहीं जलती।"

-मूसा ने क्या देखा?

-मूसा ने एक झाड़ी को देखा जो जल रही थी, परन्तु वह नष्ट नहीं हुई।

-मूसा ने जिस जलती हुई झाड़ी को देखा वह नष्ट क्यों नहीं हुई?

-क्योंकि परमेश्वर झाड़ी में थे।

-क्योंकि परमेश्वर झाड़ी में थे, झाड़ी नष्ट नहीं हुई थी।

-परमेश्वर सर्व शक्तिशाली हैं।

-जो ईश्वर कर सकता है, वह कोई नहीं कर सकता।

-जलती हुई झाड़ी में परमेश्वर क्यों थे?

-क्योंकि परमेश्वर मूसा से इस्राएलियों के बारे में बात करना चाहता था।

-इस्राएली जलती हुई झाड़ी के समान कैसे थे?

-जैसे आग जलती हुई झाड़ी को नष्ट करना चाहती थी, वैसे ही शैतान और फिरौन इस्राएलियों को नष्ट करना चाहते थे।

-जैसे परमेश्वर जलती हुई झाड़ी में था, वैसे ही परमेश्वर इस्राएलियों के साथ था।

-शैतान और फिरौन इस्राएलियों को नष्ट करने में सक्षम नहीं थे, जबकि परमेश्वर उनके साथ था।

-जलती हुई झाड़ी से परमेश्वर ने मूसा का नाम पुकारा।

आइए पढ़ें निर्गमन 3:4

4-जब यहोवा ने देखा कि वह देखने को गया है, तब परमेश्वर ने झाड़ी के भीतर से उसे पुकारा, “मूसा! मूसा!" और मूसा ने कहा, "यहाँ मैं हूँ।"

-मूसा को यह नहीं पता था कि परमेश्वर जलती हुई झाड़ी में था जब तक कि परमेश्वर ने झाड़ी से उससे बात नहीं की।

-परमेश्वर को मूसा की भाषा कैसे पता चली?

-परमेश्वर सभी भाषाएं जानता है।

-ऐसी कोई भाषा नहीं है जिसे परमेश्वर नहीं जानते।

-परमेश्वर आपकी भाषा भी जानते हैं।

-परमेश्वर आपकी हर बात सुनते हैं।

-परमेश्वर आपकी हर बात को समझते हैं।

-आप भले ही फुसफुसाएं, परमेश्वर सब कुछ सुनता है।

-परमेश्वर ने जलती हुई झाड़ी में से मूसा से फिर कहा:

आइए पढ़ें निर्गमन 3:5-6

5- "और करीब मत आओ," परमेश्वर ने कहा। "अपनी जूती उतार ले, क्योंकि जिस स्थान पर तुम खड़े हो वह पवित्र भूमि है।"

6-उसने कहा, मैं तेरे पिता का परमेश्वर, इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं। इस पर मूसा ने अपना मुंह छिपा लिया, क्योंकि वह परमेश्वर की ओर देखने से डरता था।

-परमेश्वर ने मूसा को अपने जूते उतारने के लिए क्यों कहा?

-क्योंकि मूसा सिद्ध परमेश्वर के सामने खड़ा था।

-क्योंकि मूसा पवित्र परमेश्वर के सामने खड़ा था।

-तब परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों के बारे में बताया।

आइए पढ़ें निर्गमन 3:7-10

7-यहोवा ने कहा, “मैं ने मिस्र में अपनी प्रजा की दुर्दशा देखी है। मैंने उन्हें उनके दास चालकों के कारण चिल्लाते हुए सुना है, और मुझे उनके कष्टों की चिंता है।

8 सो मैं उन्हें मिस्रियोंके हाथ से छुड़ाने, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में ले आया हूं, जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं।

9 और अब इस्राएलियों की दोहाई मुझ तक पहुंची है, और मैं ने देखा है कि मिस्री उन पर क्या अन्धेर करते हैं।

10-तो अब, जाओ। मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूं, कि अपक्की प्रजा इस्राएलियोंको मिस्र देश से निकाल ले आऊं।

-परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उसने इस्राएलियों की पुकार सुनी है।

-परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उसने मूसा को इस्राएलियों को मिस्र और गुलामी से बाहर निकालने के लिए चुना था।

-परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उसने मूसा को इस्राएलियों को वापस कनान देश में ले जाने के लिए चुना था।

-मूसा ने परमेश्वर को क्या उत्तर दिया?

आइए पढ़ें निर्गमन 3:11

11 परन्तु मूसा ने परमेश्वर से कहा, मैं कौन हूं, कि मैं फिरौन के पास जाऊं, और इस्राएलियोंको मिस्र से निकाल ले आऊं?

-मूसा ने परमेश्वर से कहा कि वह इस्राएलियों को मिस्र से बाहर नहीं ले जा सकता।

-मूसा ने परमेश्वर से क्यों कहा कि वह इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालने में सक्षम नहीं है?

-क्योंकि मूसा ने उस समय को याद किया जब उसने इस्राएलियों की मदद करने की कोशिश की थी, लेकिन असफल रहा था।

-परमेश्वर ने मूसा को क्या जवाब दिया?

आइए पढ़ें निर्गमन 3:12

12-और परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ रहूंगा। और तेरे लिये यह चिन्ह होगा, कि जिस ने तुझे भेजा है वह मैं हूं, जब तू उन लोगोंको मिस्र से निकाल ले आए, तब इस पहाड़ पर परमेश्वर को दण्डवत करना।"

-परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह मूसा के साथ रहेगा।

-परमेश्वर ने मूसा को एक संकेत भी दिया।

-क्या संकेत था कि परमेश्वर ने मूसा को दिया था?

-परमेश्वर ने वादा किया कि वह मूसा को उस पहाड़ पर वापस लाएगा जहां वह जलती हुई झाड़ी के सामने खड़ा था।

-पर्वत का नाम सिनाई पर्वत था।

-मूसा ने परमेश्वर को क्या उत्तर दिया?

आइए पढ़ें निर्गमन 3:13

13 मूसा ने परमेश्वर से कहा, यदि मैं इस्राएलियोंके पास जाकर उन से कहूं, कि तुम्हारे पितरोंके परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, और वे मुझ से पूछते हैं, कि उसका नाम क्या है? तब मैं उन से क्या कहूं? ?"

-मूसा को डर था कि इस्राएली उस पर विश्वास नहीं करेंगे जब वह कहेगा कि परमेश्वर ने उन्हें उन्हें छुड़ाने के लिए भेजा है।

-इसलिए, मूसा ने परमेश्वर से उसका नाम पूछा जो वह इस्राएलियों को बताएगा।

-परमेश्वर ने कैसे उत्तर दिया?

आइए पढ़ें निर्गमन 3:14

14-परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं वही हूं जो मैं हूं। तुम इस्राएलियों से यों कहना: 'मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।'"

-परमेश्वर ने मूसा से इस्राएलियों को यह बताने के लिए कहा कि "मैं हूँ" ने मूसा को गुलामी से छुड़ाने के लिए भेजा था।

-परमेश्वर के नाम "मैं हूँ" का क्या अर्थ है?

-इसका मतलब है कि परमेश्वर की कोई शुरुआत नहीं है।

-इसका मतलब है कि परमेश्वर का कोई अंत नहीं है।

-इसका मतलब है कि परमेश्वर हमेशा रहते हैं।

-इसका मतलब है कि ऐसा कोई समय नहीं रहा जब परमेश्वर जीवित नहीं थे।

-परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा:

आइए पढ़ें निर्गमन 3:15-18

15-परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, "इस्राएलियों से कहो, 'यहोवा, तुम्हारे पितरों का परमेश्वर, इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर- ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।' यह मेरा है नाम सदा

के लिए, वह नाम जिसके द्वारा मुझे पीढ़ी से पीढ़ी तक याद किया जाता है।

16-जाओ, इस्राएल के पुरनियों को इकट्ठा करो, और उन से कहो, यहोवा, तुम्हारे पितरों का परमेश्वर, इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर, मुझ को दिखाई दिया, और कहा, मैं ने तुम पर दृष्टि की है, और जो कुछ देखा है उसे मैं ने देखा है। मिस्र में तुम्हारे साथ किया गया है।

17 और मैं ने तुझ को मिस्र में तेरी विपत्ति से निकालकर कनानियों, हित्ती, एमोरियों, परिज्जियों, हिव्वी, और यबूसियोंके देश में ले आने का वचन दिया है, जो दूध और मधु की धाराएं बहती हैं।'

18-इस्राएल के पुरनिये तेरी सुनेंगे।"

-परमेश्वर ने इस्राएलियों से यह भी कहा कि इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक और याकूब ने उन्हें छुड़ाने के लिए मूसा को भेजा था।

-क्या फिरौन इस्राएलियों को मिस्र छोड़ने देगा?

-यही परमेश्वर ने कहा:

आइए पढ़ें निर्गमन 3:19-20

19-परमेश्वर ने कहा, “परन्तु मैं जानता हूं, कि मिस्र का राजा तुझे तब तक जाने न देगा, जब तक कि उसका बल उसे विवश न करे।

20 इसलिथे मैं अपना हाथ बढ़ाकर मिस्रियोंको उन सब आश्चर्यकर्मोंसे जो मैं उनके बीच करूंगा, उन पर मार डालूंगा। उसके बाद, वह तुम्हें जाने देगा।”

-क्या परमेश्वर को पता था कि फिरौन इस्राएलियों को मिस्र छोड़ने नहीं देगा?

-हां।

-परमेश्वर को कैसे पता चला कि फिरौन इस्राएलियों को मिस्र छोड़ने नहीं देगा?

-परमेश्वर सब कुछ जानता है।

-इससे पहले कि आप कोई विचार करें, ईश्वर आपके विचार को जानता है।

-इससे पहले कि आप एक शब्द कहें, परमेश्वर आपके शब्द को जानता है।

-इससे पहले कि आप कुछ करें, परमेश्वर जानता है कि आप क्या करने जा रहे हैं।

-मूसा अभी भी डरता था कि इस्राएली विश्वास नहीं करेंगे कि परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से बाहर ले जाने के लिए चुना है।

-यहाँ मूसा ने परमेश्वर से क्या कहा:

आइए पढ़ें निर्गमन 4:1

1-मूसा ने उत्तर दिया, “यदि वे मेरी प्रतीति न करें, या मेरी न सुनें, और कहें, कि यहोवा ने तुझे दर्शन न दिया हो?”

-क्योंकि मूसा डर गया था, परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों को दिखाने के लिए दो चिन्ह दिए।

आइए पढ़ें निर्गमन 4:2-9

2-तब यहोवा ने उस से कहा, तेरे हाथ में यह क्या है? "एक कर्मचारी," उन्होंने जवाब दिया।

3- यहोवा ने कहा, “उसे भूमि पर फेंक दे।” मूसा ने उसे भूमि पर पटक दिया, और वह साँप बन गया, और वह उसके पास से भागा।

4-तब यहोवा ने उस से कहा, अपना हाथ बढ़ाकर पूंछ से पकड़। तब मूसा ने आगे बढ़कर सांप को पकड़ लिया, और वह उसके हाथ में लाठी बन गया।

5 “यह इसलिए है,” यहोवा ने कहा, “यह इसलिए है कि वे विश्वास करें कि यहोवा, उनके पितरों का परमेश्वर, इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर- तुझे दिखाई दिया है।”

6 तब यहोवा ने कहा, “अपना हाथ अपने वस्त्र के भीतर रख।” तब मूसा ने अपना हाथ अपने लबादे में रखा, और जब उसने उसे निकाला, तो वह हिम के समान कोढ़ जैसा था।

7-“अब इसे अपने लबादे में रख, यहोवा ने कहा। तब मूसा ने अपना हाथ अपके चोले में रखा, और जब उस ने उसे निकाला, तो वह उसके सब शरीरोंकी नाईं फिर ठीक हो गया।

8-तब यहोवा ने कहा, “यदि वे तेरी प्रतीति न करें, या पहिले चमत्कार पर ध्यान न दें, तो दूसरे की प्रतीति करें।

9-परन्तु यदि वे इन दोनों चिन्होंकी प्रतीति न करें या तेरी न सुनें, तो नील नदी से थोड़ा जल लेकर सूखी भूमि पर उण्डेल दें। जो जल तू नदी से लेगा वह भूमि पर लोहू बन जाएगा।”

-यह दिखाने के लिए पहला संकेत क्या था कि परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालने के लिए चुना था?

-मूसा के कर्मचारी एक सांप में बदल गए, और फिर एक कर्मचारी में वापस आ गए।

-यह दिखाने के लिए दूसरा चिन्ह क्या था कि परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालने के लिए चुना था?

-जब उसने अपना हाथ अपने कोट के अंदर रखा, तो मूसा का हाथ कोढ़ हो गया, और जब उसने अपना हाथ एक बार फिर अपने कोट के अंदर रखा तो वह फिर से ठीक हो गया।

-परमेश्वर की ओर से इन दो चिन्हों के बावजूद, मूसा को अभी भी डर था कि इस्राएल उसके पीछे नहीं चलेगा।

-यहाँ मूसा ने परमेश्वर से क्या कहा:

आइए पढ़ें निर्गमन 4:10

10-मूसा ने यहोवा से कहा, हे यहोवा, मैं न तो कभी वाक्पटु रहा, और न अतीत में, और न जब से तू ने अपके दास से बातें की हैं। मैं वाणी और जुबान में धीमा हूँ।"

-मूसा ने परमेश्वर से कहा कि वह ठीक से बोल नहीं पा रहा है।

-परमेश्वर ने क्या जवाब दिया?

आइए पढ़ें निर्गमन 4:11-12

11-यहोवा ने उस से कहा, मनुष्य का मुंह किस ने दिया? कौन उसे बहरा या गूंगा बनाता है? कौन उसे दृष्टि देता है या उसे अंधा बनाता है? क्या मैं नहीं, यहोवा?

12-अब जाओ; मैं तुम्हें बोलने में मदद करूँगा और तुम्हें सिखाऊँगा कि क्या कहना है।"

-वह कौन था जिसने मूसा को बोलने की क्षमता दी?

-परमेश्वर।

-वह कौन था जो मूसा को अच्छा बोलने में मदद कर सका?

-परमेश्वर।

-परमेश्वर मूसा से कह रहा था कि वह उसे अच्छा बोलने में मदद करेगा।

-हालाँकि परमेश्वर मूसा की मदद करना चाहता था, फिर भी मूसा इस्राएलियों को मिस्र से बाहर नहीं ले जाना चाहता था।

-आइए पढ़ें कि मूसा ने तब परमेश्वर से क्या कहा:

आइए पढ़ें निर्गमन 4:13

13 परन्तु मूसा ने कहा, हे यहोवा, किसी और को ऐसा करने के लिथे भेज दे।

- क्योंकि मूसा इस्राएलियों को मिस्र से बाहर ले जाने से डरता था, परमेश्वर मूसा पर क्रोधित हो गया।

-लेकिन परमेश्वर ने मूसा को फिरौन से बात करने में मदद करने के लिए किसी को भेजने का वादा किया।

आइए पढ़ें निर्गमन 4:14-17

14 तब यहोवा का कोप मूसा पर भड़क उठा, और उस ने कहा, तेरा भाई हारून लेवीय क्या हुआ? मुझे पता है कि वह अच्छा बोल सकता है। वह पहले से ही तुमसे मिलने के लिए रास्ते में है, और जब वह तुम्हें देखेगा तो उसका दिल खुश हो जाएगा।

15 और उस से बातें करना, और उसके मुंह से बातें करना; मैं तुम दोनों को बोलने में मदद करूंगा और तुम्हें सिखाऊंगा कि क्या करना है।

16-वह तेरे लिथे लोगोंसे बातें करेगा, और मानो वह तेरा मुंह हो, और मानो तू उसके लिथे परमेश्वर हो।

17 परन्तु इस लाठी को अपने हाथ में ले लो, कि तुम उसके द्वारा चमत्कारी चिन्ह दिखा सको।"

-मूसा को फिरौन से बात करने में मदद करने के लिए परमेश्वर ने किसे भेजा?

-हारून, मूसा का भाई।

-क्योंकि परमेश्वर ने वादा किया था कि उसका भाई हारून उसकी मदद करेगा, मूसा आखिरकार जाने के लिए तैयार हो गया।

आइए पढ़ें निर्गमन 4:18 और 20

18 तब मूसा अपके ससुर यित्रो के पास गया, और उस से कहा, मुझे अपने लोगों के पास मिस्र में जाकर देखने दे कि क्या उन में से कोई जीवित है। जेथ्रो ने कहा, "जाओ, और मैं तुम्हारे अच्छे होने की कामना करता हूं।"

20 तब मूसा ने अपक्की पत्नी और पुत्रों को लेकर गदहे पर बिठाया, और मिस्र को लौट गया। और उसने परमेश्वर की लाठी को अपने हाथ में लिया।

-परमेश्वर मूसा के साथ धैर्यवान था।

-यद्यपि मूसा इस्राएलियों को मिस्र से बाहर नहीं ले जाना चाहता था, परमेश्वर ने उसे चुना था।

-परमेश्वर इस्राएलियों को गुलामी से क्यों बचाना चाहता था?

-क्योंकि परमेश्वर ने उनसे प्रेम किया, और वह नहीं चाहता था कि वे गुलामी में रहें।

-क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया था कि वह उन्हें वापस कनान देश में ले जाएगा।

-क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया था कि वह इस्राएलियों के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजेगा।

-अगले पाठ में, हम देखेंगे कि परमेश्वर इस्राएल को कैसे बचाएगा।